एक पत्रकार की
पत्रकार और संदर्भ पर दो अलग-अलग किताबें

❐ भगवतीधर वाजपेयी

पं. माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल के अंतर्गत पत्रकारिता के युग निर्माताओं की श्रृंखला में जिन कुछ हिन्दी पत्रकार मनीषियों पर पुस्तकें तैयार कराई गई हैं, उनमें आलोच्य पुस्तक भी है। स्वातंत्र्य पूर्व पत्रकारिता का युग अलग था क्योंकि उस समय भाषायी पत्रकारिता का लक्ष्य देश की स्वाधीनता था। उस समय के पत्रकार अपनी सारी सामर्थ्य के द्वारा पत्र निकालते थे और जब साधन चुकते तो पत्र का प्रकाशन बन्द हो जाता था। उनका ध्यान व्यावसायिकता पर न रहकर स्वाधीनता प्राप्ति उनका एकमात्र लक्ष्य था। यह लक्ष्य जब प्राप्त हो गया तो पंद्रह अगस्त, 1947 के बाद पत्रकारिता का एक नया युग प्रारंभ हो गया। इस नये युग में पत्रकारिता के जो भी मापदंड रहे हैं उनके साथ व्यावसायिकता भी जुड़ गई और आज समाचार-पत्र एक दम नये कलेवर के साथ प्रकाशित हो रहे हैं।

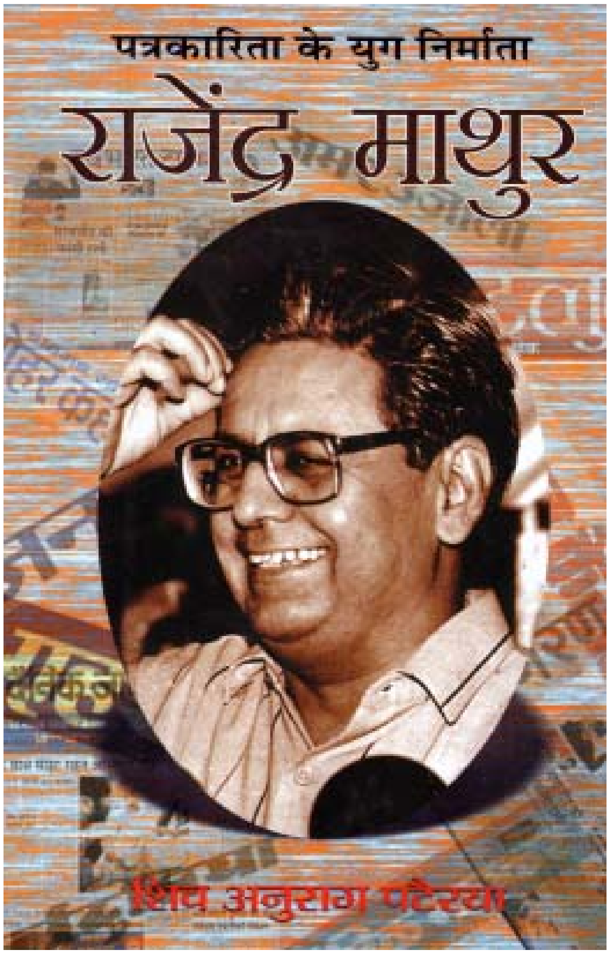

इस नये युग में हिन्दी के पत्रकारों में स्व. राजेन्द्र माथुर का नाम एक प्रकाश स्तम्भ के रूप में है। मध्यप्रदेश की मालवा भूमि धन-धान्य और लोक संस्कृति और इतिहास से ही समृद्ध नहीं है, वरन् अपनी सोंधी गंध से युक्त माटी के प्रति समर्पित सपूतों से भी सम्पन्न है। उसके एक ऐसे ही सपूत स्व. राजेन्द्र माथुर थे। उन्होंने पत्रकार के नाते जो यश अर्जित किया वह इसलिए कि उन्होंने इस विधा (पत्रकारिता) को बड़ी प्रामाणिकता से अपनाकर अपनी श्रेष्ठतम योग्यता का परिचय दिया। वे अंग्रेजी साहित्य के विद्यार्थी एवं एम.ए. थे तथा उस भाषा के दक्ष लेखक भी थे। चाहते तो अंग्रेजी-पत्रों में बड़ी सरलता से अपना एक ऊँचा स्थान बना सकते थे, पर उन्होंने हिन्दी पत्रकारिता को ही अपनाया। उसका यह कारण हो सकता है कि इन्दौर में, जहाँ उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की और अंग्रेजी के व्याख्याता भी रहे, वहाँ उस भाषा के समाचार-पत्र नहीं थे। मालवा के इस महानगर में नईदुनिया समाचार-पत्र हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत प्रमुख स्थान रखता था। माथुर जी में लेखन की ललक थी और अपने विद्यार्थी जीवन में ही उन्होंने नईदुनिया में अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर लिखने के लिए एक स्तम्भ माँगा। पत्र के तत्कालीन प्रधान संपादक श्री राहुल बारपुते ने इस युवक के उत्साह को देखकर उन्हें पत्र में जगह दी। माथुर जी का यह स्तम्भ पाठकों द्वारा बड़े चाव से पढ़ा जाने लगा। इतना ही नहीं जब उन्होंने अपना छात्र जीवन समाप्त कर महाविद्यालय में अंग्रेजी के अध्यापक का दायित्व संभाला, तब भी वे नईदुनिया में अपने स्तम्भ के माध्यम से पाठकों से जुड़े रहे। कुछ समय बाद जब उन्हें लगा कि अध्यापक के रूप में और नईदुनिया के स्तम्भ लेखक के रूप में कार्य का बोझ अधिक है तब उन्होंने अध्यापन से मुक्त हो पत्रकारिता को अपनाया। नईदुनिया ने उन्हें श्री बारपुते के साथ संपादक के रूप में सम्मानित किया। श्री माथुर लगातार अट्ठाईस वर्षों तक नईदुनिया के संपादक के रूप में अपनी प्रतिभा को निखारते रहे और हिन्दी जगत में अखिल भारतीय स्तर पर उनकी पहचान बन गई। अब देश की राजधानी दिल्ली ने उन्हें आकर्षित किया और वे हिन्दी के राष्ट्रीय पत्र 'नवभारत टाइम्स' के सम्पादक बनाए गए। लगभग आठ वर्ष तक उन्होंने दिल्ली में रहकर हिन्दी पत्रकारिता की तो सेवा की ही 'टाइम्स ऑफ इंडिया' सदृश अंग्रेजी पत्र में लेख लिखते रहे और इस प्रकार उन्होंने

अपनी अंग्रेजी दक्षता का भी भलीभाँति परिचय दिया।

यह विधि की विडम्बना थी कि श्री माथुर दीर्घकाल तक जीवित नहीं रहे और मात्र पचपन वर्ष की आयु में वर्ष 1990 में उन्होंने अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी। उनके निधन से हिन्दी पत्रकारिता की भारी क्षति हुई।

स्व. राजेन्द्र माथुर इतना ही कुछ नहीं थे। इस ग्रन्थ के लेखक ‘श्री शिव अनुराग पटैरया’ ने एक संपादक के रूप में स्व. माथुर ने पत्रकारिता के जो मानदंड स्थापित किए, उनका बड़ा ही विराट उल्लेख किया है। उन्होंने पत्रकारिता की बड़ी सटीक परिभाषा इन शब्दों में दी ‘जलते अंगारे को छूते ही जैसे हाथ झटके से पीछे हटता है, इसी तरह जलती घटना को छूते ही पैदा होने वाली अभिव्यक्ति पत्रकारिता है।’ उन्होंने दैनिक पत्रकारिता और साप्ताहिक तथा मासिक पत्रकारिता के अंतर को भी सुस्पष्ट किया है। भाषा के संबंध में वे दुराग्रही नहीं रहे। वे सुबोधगम्य भाषा के पक्षधर थे। अपने सिद्धांतों से कोई समझौता करना उन्हें गवारा नहीं था। अपनी बेबाक टिप्पणियों के लिए वे पहचाने जाते थे। पत्रकारों को अध्ययनशील होने और अपने आचरण में शुचिता के वे पक्षधर थे। उनके व्यक्तित्व में सरलता थी और अभिव्यक्ति में तर्कपूर्ण सुस्पष्टता थी। मेरा ये मत है कि श्री पटैरया द्वारा स्व. श्री राजेन्द्र माथुर पर लिखी गई इस पुस्तक को प्रत्येक पत्रकार को, विशेष रूप से नए पत्रकारों को ध्यान से पढ़ना चाहिए। पत्रकारिता के विद्यार्थियों को इस पुस्तक को टेक्स्ट बुक के रूप में अपनाना चाहिए। पुस्तक में स्व. माथुर की पत्रकारिता किस प्रकार प्रारंभ हुई और कहाँ समाप्त हुई, उसका ही उल्लेख नहीं है। श्री माथुर गंभीर विषयों में अपने लेखों के द्वारा अपने विचारों की अभिव्यक्ति किस प्रकार करते थे इस संबंध में उनके कुछ लेख भी संग्रहीत किए गए हैं।

स्व. माथुर को यह बात बहुत सालती थी कि हिन्दी का क्षेत्र अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में बहुत बड़ा होते हुए भी उसके पत्रों की प्रसार संख्या बहुत कम है, जबकि अनेक प्रादेशिक भाषाओं के पत्रों की संख्या लाखों में है। यह तो अवश्य हुआ है कि हिन्दी पत्रों की पृष्ठ संख्या अब बीस-बाईस-चौबीस पृष्ठों तक की हो गई है। उनका अक्षर संयोजन कम्प्यूटर पर होने लगा है और मुद्रण विविध रंगों में ऑफसेट पर होने लगा है। विज्ञापनों की दृष्टि से भी वे विपन्न नहीं हैं, लेकिन प्रसार संख्या अभी भी अपेक्षित स्तर की नहीं है। इस बारे में हिन्दी के पत्रकारों के साथ पत्र मालिकों को भी गंभीरता से विचार करना चाहिए। यह स्व. राजेन्द्र माथुर के स्वप्नों को साकार करना ही होगा। आलोच्य ग्रंथ स्व. राजेन्द्र माथुर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालने का बड़ा सफल एवं स्तुत्य प्रयास है।

पुस्तक- पत्रकारिता के युग निर्माता राजेन्द्र माथुर
लेखक- शिव अनुराग पटैरया
प्रकाशक - प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
पृष्ठ संख्या - 142, मूल्य - रु. 175

मध्यप्रदेश संदर्भ - 2010

मध्यप्रदेश संदर्भ - 2010 मध्यप्रदेश शासन के बारे में राज्य के जनसंपर्क संचालनालय का प्रकाशन है। वर्ष 2009 के आँकड़ों-तथ्यों में सुधार के साथ संचालनालय का यह एक वृहद ग्रंथ के रूप में दूसरा नया प्रकाशन है।

मध्यप्रदेश देश का हृदय स्थल है। उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और बिहार इस प्रदेश के सीमावर्ती राज्य हैं। प्रदेश में जंगल हैं, सब प्रकार की खेती के लायक उपजाऊ भूमि है, नदियाँ, खनिज आदि साधन भी प्रचुर हैं। प्रकृति पूरी तरह से मेहरबान है। इस प्रकार ये सारे साधन प्रदेश के बहुमुखी विकास के लिए आवश्यक हैं। इतने पर भी प्रदेश अभी विभिन्न क्षेत्रों में पिछड़ा हुआ है। इसे अगड़े राज्यों की श्रेणी में ले जाने की किसी भी योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए वर्तमान स्थिति के आँकड़े महत्वपूर्ण हैं। आलोच्य ग्रंथ में ये सारे तथ्य संग्रहीत हैं। राज्य सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों के विकास से संबंधित जो अलग-अलग नीतियाँ बनाई हैं वे भी संपादक श्री शिव अनुराग पटैरया ने बड़े परिश्रम से ग्रंथ में उपलब्ध कराई हैं। वर्तमान मध्यप्रदेश के निर्माण को 54 वर्ष हो गए हैं। विकास की गति को तेज करने के जो प्रयास हो रहे हैं उनमें आलोच्य संदर्भ ग्रंथ निश्चित ही बहुत सहायक होगा। देश जब प्रगति की नई मंजिलों की ओर बढ़ रहा है उस समय मध्यप्रदेश अपना योगदान देने में किसी प्रकार की कोताही नहीं कर सकता।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)